अध्याय
14

चंद्र गहना से लौटती बेर

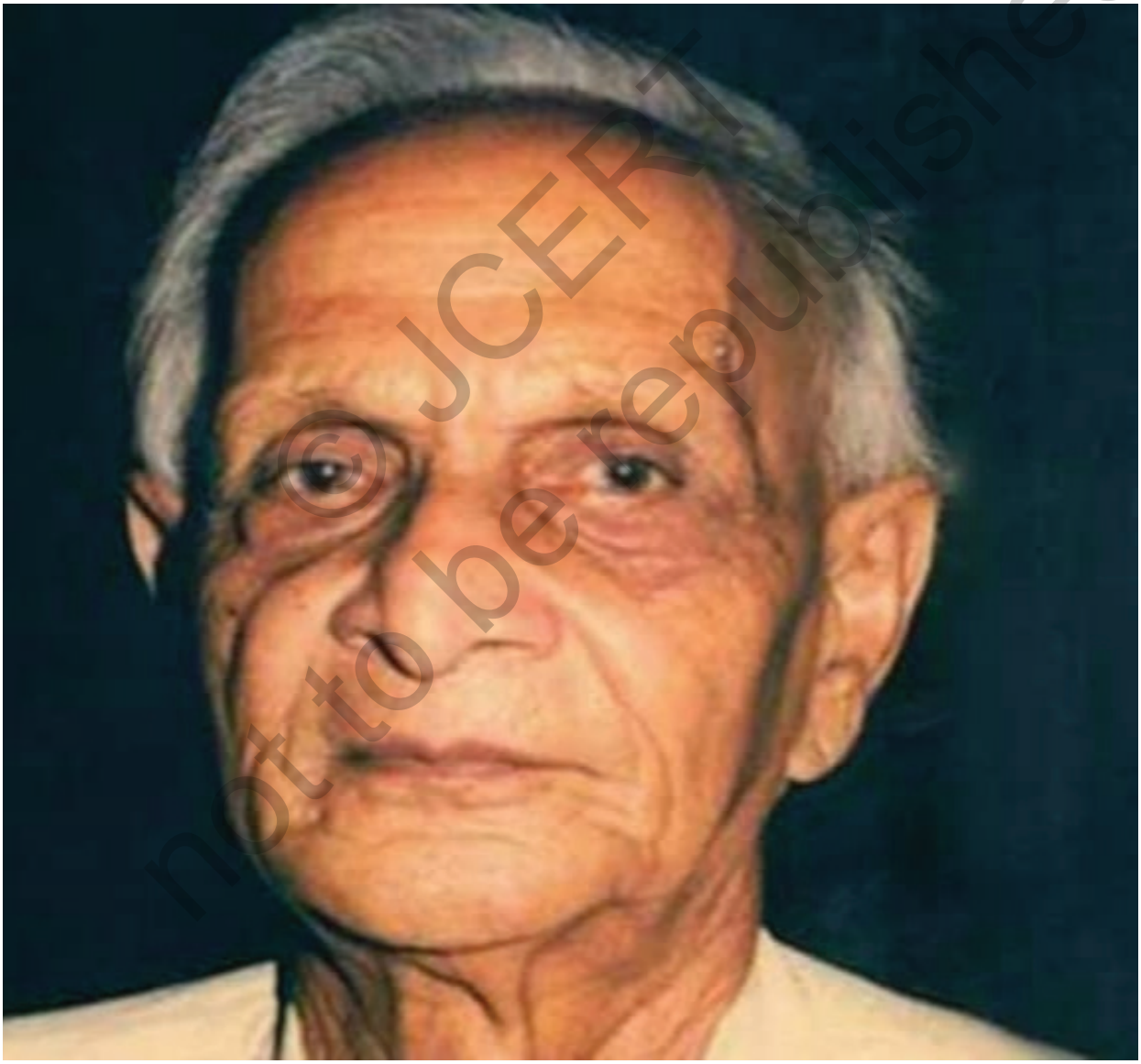

© JCERT not to be republished

केदारनाथ अग्रवाल

कवि – परिचय

कवि परिचय

केदारनाथ अग्रवाल

कवि- परिचय। जन्म- 1 अप्रैल सन् 1911 ई। बाँदा जनपद, कमासिन गाँव, उत्तर प्रदेश। मृत्यु- 22 जून सन् 2000 ई। शिक्षा- दीक्षा- इलाहाबाद, आगरा। माता- श्रीमती घसीटो देवी। पिता- श्री हनुमान प्रसाद गुप्ता

काव्य – कृतियाँ
अपूर्वा
*फूल नहीं रंग बोलते हैं। *युग की गंगा। *नींद के बादल। *आग का आईना। *पंख और पतवार। *हे मेरी तुम। *मार प्यार की थापें। *कहे केदार खरी खरी। *बसंती हवा

~ अपूर्वा (काव्य) सन् 1986 ई में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत
~ फूल नहीं रंग बोलते हैं (सोवियत लैंड पुरस्कार से पुरस्कृत)

पेशे से वकील थे
प्रगतिवादी काव्य धारा के कवि
जन सामान्य का संघर्ष और प्रकृति सौंदर्य
इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली पत्रिका परिमल में रचनाएँ प्रकाशित

भाषा शैली
> प्रकृति का यथार्थ वर्णन, > शब्दों का सौंदर्य, > ध्वनियों की धारा, > स्थापत्य की कला, > लोक भाषा के निकट, > ग्रामीण जीवन से जुड़े बिंब मुक्तक शैली

प्रकृति-प्रेम जिसमें, पूरी सृष्टि समाई हुई है। मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाला, पोखर, पहाड़, खेत, खलिहान, बाग, बगीचे आदि सभी उनके प्रेम के पात्र हैं।

© JCERT not to be republished

पाठ - परिचय

पाठ-परिचय

- चंद्र गहना से लौटती बेर कविता में प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग व्यक्त हुआ है।
- शिक्षा— व्यापारिक नगर के कोलाहल से दूर निर्जन प्राकृतिक अठखेलियों का आनंद इस कविता में व्यक्त हुआ है।
- चना, अलसी, सरसों आदि के स्वयंवर सभा में फागुन अपनी मादकता बिखेर रहा है।
- स्वच्छ जल के तल में भूरी घास भी आनंद से थिरक रही है।
- स्वच्छ जल में बगुला और काले माथे वाली चिड़िया एकटक मुद्रा में अपने भोजन की तलाश में ध्यान मग्न दिखाई पड़ रही है।
- दूसरी तरफ ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ हैं, जिनमें रींवा के काँटेदार वृक्ष खड़े हैं।
- सुग्गे का स्वर उस शांत वातावरण में अपनी ध्वनि का संचार कर रहा है, जिसका साथ सारस भी दे रहा है।
- इन प्राकृतिक गतिविधियों को देखकर कवि का हृदय भी आकाश में उड़ कर सारस की युगल जोड़ी की प्रेम कहानी चुपके से सुनने को लालायित हो उठता है।
- रंग भरी इस प्राकृतिक सुंदरता में चने का फूल गुलाबी, अलसी का फूल नीला, सरसों का फूल पीला, जल का तल नीला, घास भूरी, सूर्य की किरणें सफेद, चिड़िया काले माथे वाली, पंख श्वेत, मछली उजली, चोंच पीली है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश 1

देख आया चंद्र गहना।

देखता हूँ दृश्य अब मैं

मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला ।

एक बीते के बराबर

यह हरा ठिगना चना,

बाँधे मुरैठा शीश पर

छोटे गुलाबी फूल का,

सज कर खड़ा है।

पास ही मिल कर उगी है

बीच में अलसी हठीली

देह की पतली, कमर की है लचीली,

नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर

कह रही है, जो छुए यह

दूँ हृदय का दान उसको।

और सरसों की न पूछो-

हो गई सबसे सयानी,

हाथ पीले कर लिए हैं

ब्याह मंडप में पधारी

फाग गाता मास फागुन

आ गया है आज जैसे ।

देखता हूँ मैं: स्वयंवर हो रहा है,

प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है।

इस विजन में,

दूर व्यापारिक नगर से

प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

शब्दार्थ :-

बीते के बराबर =छोटा -सा एक बालिश्त जो एक वयस्क हाथ के अंगूठे से छोटी अंगुली तक की लंबाई का एक नाप (लगभग 22 . 5 सेंटीमीटर)

ठिगना = नाटा, छोटा

मुरैठा = पगड़ी

शीश = माथा

हठीली = जिद्दी

फाग = फागुन में गाया जाने वाला लोकगीत

अनुराग = प्रेम

विजन = निर्जन

प्रसंग :- प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में केदारनाथ अग्रवाल के द्वारा रचित कविता 'चंद्र गहना से लौटती बेर' शीर्षक कविता से ली गई है। इन पंक्तियों में कवि ने रंगभरी प्राकृतिक सुंदरता को चित्ताकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

व्याख्या :- कवि चंद्र गहना नामक स्थान से लौट रहा था जहाँ रास्ते में प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर खेत की मेड पर बैठ गया और प्रकृति के उस सुंदर रूप को निहारने लगा। कवि कहता है कि एक बीते के बराबर हरा ठिगना चना माथे पर गुलाबी रंग का मुरैठा

© JCERT not to be republished

बांधे खड़ा है। उसके बगल में ही जो देह की पतली और कमर की लचीली अलसी नीले फूल को सिर पर चढ़ा कर खड़ी है और अपना हृदय दान करने को तत्पर है। सरसों सबसे सयानी है जो, हाथ पीले कर ब्याह मंडप के स्वयंवर सभा में पधारी है, जहाँ फाग की धून से प्रकृति का प्यार भरा अंचल हिल रहा है।

विशेष :-

*चना नीले रंग की पगड़ी बाँधे खड़ा है।

*अलसी हठीली,देह की पतली तथा कमर से लचीली है।

*सरसों सबसे सयानी अर्थात् युवती है।

*पूरी प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।

*सामान्य ग्रामीण बोलचाल के शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

काव्यांश 2

और पैरों के तले है एक पोखर

उठ रहीं इसमें लहरियाँ,

नील तल में जो उगी है घास भूरी

ले रही वह भी लहरियाँ।

एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा

आँख को है चकमकाता।

हैं कई पत्थर किनारे

पी रहे चुपचाप पानी,

प्यास जाने कब बुझेगी!

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में,

देखते ही मीन चंचल

ध्यान - निद्रा त्यागता है,

चट दबा कर चोंच में

नीचे गले के डालता है!

एक काले माथ वाली चतुर चिड़िया

श्वेत पंखों के झपाटे मार फौरन

टूट पड़ती है भरे जल के हृदय पर

एक उजली चटुल मछली

चोंच पीली में दबा कर

दूर उड़ती है गगन में!

औ' यहीं से-

भूमि ऊँची है जहाँ से-

रेल की पटरी गई है।

ट्रेन का टाइम नहीं है।

मैं यहाँ स्वच्छंद हूँ.

जाना नहीं है।

शब्दार्थ :-

पैरों के तले =सामने, नजदीक

पोखर =छोटा तालाब

नील =नीला

तल =नीचे का भाग

मीन =मछली

श्वेत =सफेद

फ़ौरन =तुरंत

© JCERT not to be republished

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में केदारनाथ अग्रवाल के द्वारा रचित कविता 'चंद्र गहना से लौटती बेर' शीर्षक कविता से ली गई है। इन पंक्तियों में कवि शहरों से दूर प्राकृतिक सौंदर्य को निहार रहा है।

व्याख्या:- कवि जिस स्थान पर बैठा है उसके पास ही स्वच्छ जल से भरा हुआ एक पोखर है, जिसके तल में भूरी घास आनंद से हिलडुल रही है। स्वच्छ जल होने के कारण सूर्य की किरणें गोल खंभे के समान दिख रही है, जहाँ पत्थर चुपचाप पानी पी रहे हैं। उसी जल में मछली की तलाश में बगुला ध्यान मुद्रा में है तथा काले माथे वाली चतुर चिड़िया शांत जल में चोंच मारकर अपना शिकार आकाश में ले उड़ती है। यह जगह एकदम शांत है एवं कवि स्वच्छंद वहाँ बैठा हुआ है। उसे अन्यत्र जाने का मन नहीं कर रहा है।

विशेष:-

*शहरों से दूर रहने के कारण पोखर का जल स्वच्छ है ।

*स्वच्छ जल में भूरी घास आनंद से झूम रही है।

*'पत्थर पानी पी रहे हैं' मानवीकरण अलंकार सुंदर उदाहरण है।

*ग्रामीण बोलचाल के शब्द बहुलता से प्रयुक्त हुए हैं।

*तल, मीन, चंचल, निद्रा, श्वेत, हृदय, गगन, भूमिन आदि तत्सम शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं।

काव्यांश 3

चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी
कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ
दूर दिशाओं तक फैली हैं।
बाँझ भूमि पर
इधर-उधर रींवा के पेड़
काँटेदार कुरूप खड़े हैं।
सुन पड़ता है
मीठा मीठा रस टपकाता
सुग्गे का स्वर
टें टें टें टें;
सुन पड़ता है
वनस्थली का हृदय चीरता,
उठता-गिरता,
सारस का स्वर
टिरटों टिरटों;
मन होता है-
उड़ जाऊँ मैं
पर फैलाए सारस के संग
जहाँ जुगुल जोड़ी रहती है
हरे खेत में,
सच्ची प्रेम कहानी सुन लूँ
चुप्पे-चप्पे

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ :-

अनगढ़ = बिना गढा हुआ

बाँझ भूमी = उसर धरती

कुरुप = सौंदर्य हीन

जुगुल = युगल,जोड़ा

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज भाग-1' में केदारनाथ अग्रवाल के द्वारा रचित कविता 'चंद्र गहना से लौटती बेर' शीर्षक कविता से ली गई है। इन पंक्तियों में कवि ने छोटी-छोटी पहाड़ियों के साथ बंजर धरती पर कांटेदार झाड़ियों के बीच सुग्गे और सारस द्वारा शांत वातावरण में अपनी मधुर वाणी से गुंजित करने का वर्णन किया है।

व्याख्या:- कवि की नजरें अब खेतों से उठकर दूर तक जाती है, तो उन्हें चित्रकूट की असमान रूप से फैली पहाड़ियाँ नजर आती है, जो ज्यादा ऊँची तो नहीं है, परंतु बहुत दूर तक फैली है। यह भूमि बंजर है, जिस पर रींवा के कांटेदार वृक्ष उगे हुए हैं। आकाश में तोते और सारस की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है, जो इस शांत वातावरण में हलचल उत्पन्न करती है। जंगल को भेद देने वाली सारस की आवाज कभी घटती है, तो कभी बढती है, जिसे सुनकर कवि कल्पना करता है, कि काश ! वह भी सारस के संग उड़कर हरे खेतों के बीच चला जाता और चुपके से उनकी प्रेम कहानी को सुन पाता।

विशेष:-

*कवि का प्रकृति प्रेम अनगढ़ छोटी-छोटी पहाड़ियों, बंजर भूमि एवं काँटेदार वृक्षों पर भी समान रूप से व्यक्त हुआ है ।

*सुग्गे और सारस की ध्वनि से वन के शाँत वातावरण में मधुर ध्वनि का संचार हो रहा है ।

*कवि इस दृश्य से मोहित होकर आकाश में उड़ने की कल्पना करता है।

प्रश्न - अभ्यास

प्रश्न 1. 'इस विजन में ..... अधिक हैं' -पंक्तियों में नगरीय संस्कृति के प्रति कवि का क्या आक्रोश है और क्यों?

उत्तर: इस विजन में अर्थात् शांत, कोलाहल से दूर इस वातावरण में आकर कवि को बड़ा अच्छा लग रहा है। यहाँ व्यापारिक हलचल नहीं है। कवि का शहरी वातावरण के प्रति यह आक्रोश है, कि वहाँ शोर-शराबा, आपा-धापी व व्यस्तता अधिक है। शहर के लोग प्रकृति को भूल चुके हैं।

प्रश्न 2. सरसो को 'सयानी' कहकर कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर: कवि सरसों को सयानी कहकर यह कहना चाहता है, कि सरसों की फसल पकने के लिए तैयार हो चुकी है। जब खेत में सरसों फलने को होती है तब उसके ऊपर पीले-

© JCERT not to be republished

पीले फूल आ जाते हैं, इससे उसका सौंदर्य कई गुना बढ़ जाता है। जब लड़की सयानी और विवाह योग्य हो जाती है तब उसके हाथ पीले कर दिए जाते हैं। कवि भी सरसों का मानवीकरण करके उसे विवाह योग्य युवती के रूप में चित्रित किया है, कि वह नवयुवती बन गई हैं और अब हाथ पीले करके स्वयंवर के मंडप में आ बैठी है कि कोई उसका वरण कर उसे ले जाए।वह उसके साथ विवाह करने के लिए तैयार है ।

प्रश्न 3. अलसी के मनोभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: यहाँ पर अलसी हठीली नायिका के समान प्रतीत होती है। उसका चित् अति चंचल और प्रेमी से दूर है। वह नीले फूलों को सिर पर रखकर कह रही है, कि वह उस फूल को प्रथम स्पर्श करने वाले को अपने हृदय का दान देकर अपना स्वामी बनाने के लिए आतुर है।

प्रश्न 4. अलसी के लिए 'हठीली' विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है?

उत्तर : कवि ने अलसी को हठीली युवती के रूप में चित्रित किया है। अलसी रूपी नायिका का हठ यह है, कि जो उसे छुएगा वह उसी को अपना हृदय दे देगी जबकि वह जानती है, कि ठिगना चना उसके नीले फूलों तक नहीं पहुंच पाएगा। उसके हठीली होने का एक कारण और भी है वह खेत में बोई गई चने की फसल के बीच-बीच में उग आती है। उस पर जमीन के प्रतिकूल प्रकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह हठ करके अपने लिए जगह बना लेती है। अलसी में चंचलता भी है।

प्रश्न 5. 'चाँदी का बड़ा - सा गोल खंभा ' में कवि की किस सूक्ष्म कल्पना का आभास मिलता है?

उत्तर :- इस प्रयोग में कवि की सूक्ष्म कल्पना शक्ति का आभास होता है। कवि प्रकृति की सूक्ष्म क्रिया - कलापों पर पैनी नज़र रखता है। सरोवर के जल में क्षितिज की ओर जो सूरज का लंबा प्रतिबिंब बन रहा है, वह चाँदी के खंभे के समान प्रतीत हो रहा है। रंग ,रूप और चमक की समानता के कारण यह कल्पना अत्यंत मनोरम बन पड़ी है।

प्रश्न 6. कविता के आधार पर ' हरे चने ' का सौंदर्य अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

उत्तर: कवि ने हरे चने के सौंदर्य का वर्णन करने के लिए उसका मानवीकरण किया है। उसे एक दूल्हे के रूप में चित्रित किया गया है। चने का यह पौधा ठिगना बित्ते भर का है। इसने अपने सिर पर गुलाबी फूलों का मुरैठा बाँध रखा है ।छोटा होते हुए भी चने का पौधा सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

प्रश्न 7.कवि ने प्रकृति का मानवीकरण कहाँ - कहाँ किया है ?

उत्तर: कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में प्रकृति का मानवीकरण किया है :-

(1) यह हरा ठिगना चना,

बाँधे मुरैठा शीश पर

छोटे गुलाबी फूल का,

सज कर खड़ा है।

© JCERT not to be republished

(2) पास ही मिल कर उगी है

बीच में अलसी हठीली

देह की पतली, कमर की है लचीली,

नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर

कह रही है, जो छुए यह

दूँ हृदय का दान उसको।

(3) और सरसों की न पूछो —

हो गई सबसे सयानी ,

हाथ पीले कर लिए हैं

ब्याह - मंडप में पधारी

(5) हैं कई पत्थर किनारे,

पी रहे चुपचाप पानी,

प्यास जाने कब बुझेगी !

प्रश्न 8. कविता में से उन पंक्तियों को ढूँढिए जिनमें निम्नलिखित भाव व्यंजित हो रहा है—

और चारों तरफ़ सूखी और उजाड़ जमीन है लेकिन वहाँ भी तोते का मधुर स्वर मन को स्पंदित कर रहा है।

उत्तर: चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी

कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ

दूर दिशाओं तक फैली हैं।

बाँझ भूमि पर

इधर-उधर रींवा के पेड़

काँटेदार कुरुप खड़े हैं।

सुन पड़ता है

मीठा-मीठा रस टपकाता

सुग्गे का स्वर

टें टें टें टें ;

© JCERT not to be republished